ज़ीनत चौधरी

ज़ीनत चौधरी को देख कर यह बात तो साबित हो जाती है कि मेहनत करने वालों की कभी हार नहीं होती। जिस समाज में सब को इस बात का डर लगता है कि लोग क्या कहेंगे, वहाँ ज़ीनत चौधरी ने सोचा कि सिर्फ चार लोगों की क्यों सभी लोग उनका नाम पुकारे उनके कामयाबी के बारे में बात करें।

ज़ीनत चौधरी की शिक्षिका उन्हें इसलिए नहीं पढ़ाती थी क्योंकि उनका मानना था कि मुस्लिम समाज में लड़कियों की पढाई पूरी नहीं करते। ज़ीनत चौधरी के पिता में शिक्षिका को आश्वासन दिया कि वह अपनी बेटी की पढाई पूरी करवाएंगे और इसके लिए वह अपनी बेटी को शिक्षा के लिए गाँव से बाहर भेजने के लिए तैयार थे।

जीनत को पढ़ाई के साथ-साथ खेल में भी दिलचस्पी पैदा होने लगी और यहीं से उनका खेल का सफर शुरू हुआ। वह सपोर्ट कैंप के लिए जब 7 दिन घर से बाहर गई वापस लौटने के बाद गाँव में लोगों ने बहुत सी बातें की और इन सब बातों से तंग आकर उनके पिताजी ने उनका खेल बंद करवा दिया। इस बात का ज़ीनत पर बहुत गहरा असर हुआ। उन्होंने इस गम को खुद पर हावी ना करते हुए लड़कियों के लिए स्पोर्ट अकैडमी शुरू करने का फैसला किया।

ज़ीनत चौधरी के अकैडमी में आने वाली लड़कियाँ जब मैदान में उतरी तो बहुत से लोगों ने उनके काबिलियत पर सवालिया निशान उठाया। लेकिन यह लड़कियों ने घर में भी महनत की और रात में प्रैक्टिस कर खुद को इस काबिल बनाया कि वह कबड्डी, तीरंदाजी और दूसरे स्पोर्ट्स में भारत का प्रतिनिधित्व कर सके। एकेडमी से निकलती कई लड़कियां नेशनल लेवल पर खेल चुकी है, कैंप पर जा रही है और अपने हुनर को बढ़ा रही है।

2003 से शुरू अकैडमी आज न जाने कितनी लड़कियों के टूटे हुए सपनों को पूरा कर रही है। ज़ीनत चौधरी ने सिर्फ अपने ही सपने पूरे नहीं किए बहुत से लड़कियां जो खुद का सपना खेल के मैदान में देखती है और गले में मेडल की ख्वाहिश रखती है उन्हें पूरा किया है।

उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर के कस्बा शाहपुर में आज जीनत चौधरी का नाम किसी तारूफ का मोहताज नहीं।